हम स्वयं ही हैं स्वयं के सी.ए. और ऑडिटर

मार्च एंडिंग : जीवन के हिसाब की बैलेंस-शीट भी तैयार करना चाहिए...

मार्च मास यानी कि हिसाब-किताब का मास। छोटे-बड़े, पढ़े-अनपढ़, व्यापारी-उद्यमी और सरकार सभी तेज़ी और मंदी, अभाव और महंगाई के साथ मार्च को जोड़ देते हैं। व्यापारी और बड़ी लिमिटेड कंपनियां बाज़ार में आम आदमी के दिमाग में असर पहुंचे ऐसा वातावरण क्रियेट करते हैं। मार्च मास के बहाने निकालकर लेनदार की बोलती बंद कर देते हैं। और लेनदार भी समझ जाते हैं कि ये मास अप टू डेट करने का मास है, इसलिए वे भी उसी अनुसार अपना माइंड बना लेते हैं। सचमुच में 'मार्च एंडिंग' शब्द उच्चारने में भी गौरव अनुभव करते हैं। उसमें भी खास नौकरी करने वाले।

सवाल यह खड़ा होता है कि मार्च मास में जब साल भर के नफा और नुकसान का निष्कर्ष निकलता हो तो परमात्मा ने जो ये अमूल्य जीवन दिया है, उसका हिसाब-किताब क्यों नहीं..... !!! हम ही अपने आप के सी.ए. और अपने आप के ऑडिटर। लेकिन दुःख की बात यह है कि हम में से ज़्यादातर लोग इतने धार्मिक होने के बावजूद मार्च एंडिंग की तरह अपने जीवन का हिसाब करते ही नहीं। कई लोग तो हिसाब चुक्तू किये बिना ही या तो बड़ी-बड़ी डिग्री धारी होने के बावजूद भी हिसाब किये बिना ही बैक टू पवेलियन हो जाते हैं। जैसे भगवान, अपने मालिक का डर जैसा कुछ है ही नहीं। सिर्फ बोलने खातिर ही परमात्मा का डर रखते हैं। आचार में नहीं। ज़िन्दगी के किताब में प्लस-माइनस करना ही भूल जाते हैं।

ब्र.कु. गंगाधर

दुःख की बात यह है कि अपने जीवन का हिसाब कब करना है, ये भी तो हम निश्चित नहीं करते। अपना एंड कब होगा, इसकी हमें खबर नहीं है, फिर भी मार्च एंडिंग की तरह हम अपना हिसाब ही नहीं करते। जैसे किसी का देना बाकी है, वो पेंडिंग पड़ा है, तो वो पेंडिंग ही रह जाता है। कितने भी प्रयास करने के बावजूद भी उसका हिसाब चुक्तू नहीं कर पाये। ज़िन्दगी में भी ऐसा ही है। हमने कितनों को दुःख दिया, कितनों को अपने चंगुल में फंसाया, कितनों के प्रति नफरत, तो कितनों के प्रति ईर्ष्या, इन सबका हिसाब हमने देखा ही नहीं। नटशेल में देखें तो हम अच्छी तरह से जीवन जिये ही नहीं। दिखावे के लिए भगवान को हाज़िर-नाज़िर रखते हुए भ्रष्टाचार, दुराचार से इकट्ठी की हुई सम्पत्ति की आड़ में, दानेश्वर बन कितना दिखावा किया, कामचोरी और करचोरी करके देश को कितना नुकसान पहुंचाया, कितनी मौज-मस्ती की, इन सबका कोई हिसाब है हमारे पास! जवाब में तो ना ही आयेगा! ये परमात्मा द्वारा दिया हुआ अमूल्य जीवन, जो सबको सुख देने, सबको सहयोग करने के लिए था, जो हमने बिना हिसाब रखे ही व्यतीत कर दिया। तब भला कर्म तो अपना परचम दिखायेगा ही ना! और क्या ईश्वर भी हमें माफ करेगा!

अगर हम अपने आप से रूबरू हों तो अंदर अपना विवेक आवाज़ देता है कि हमें रोज़ का हिसाब, आचार-विचार का हिसाब रोज़ रखना चाहिए। जिससे हमें पता चलता कि हमारी ज़िन्दगी किस डायरेक्शन में चल रही है। मार्च महीने की तरह जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं होता। हमें तो अपना हिसाब हर रोज़ करते रहना चाहिए। हम जीते जी स्वयं ही अपने जीवन का पोस्टमार्टम करेंगे तभी ही सच्चा हिसाब मिल सकेगा। शर्त ये है कि हिसाब के समय ईमानदारी और प्रामाणिकता का पैरामीटर हमारे खून की तरह ही हममें दौड़ते रहना चाहिए। सुबह 'थैंक यू' और शाम को 'सॉरी', ये दो शब्द हमारे हिसाब-किताब में होने चाहिए, जिससे अपने आप को सुधार सकें और क्या एडिशन करना है ये भी जान सकें।

अपने जीवन के हिसाब का ऑडिटर स्वयं से बड़ा दूसरा कोई हो नहीं सकता। स्वयं के साथ धोखा स्वयं को ही महंगा पड़ेगा। न रो सकेंगे, न हँस सकेंगे। सिर्फ अपने आप को कोसते रहना ही बाकी रह जायेगा। होता क्या है, हमारे जीवन में पैसा, प्रतिष्ठा, पद, अहम् और मेरापन के साथ प्रभु उपहार में मिले इस जीवन का अस्तित्व ही खतरे से खाली नहीं होता! अब हम सबको जीवन की सच्ची कमाई करने के लिए मार्च एंडिंग जैसा कुछ समय निश्चित करना चाहिए, जिससे हम अपने जीवन का महोत्सव मना सकें।

इस तरह... दुआयें देते और लेते चलें...

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

सभी ब्राह्मणों का जन्म स्थान मधुबन है। मधुबन ही आपका पर्मानेंट एड्रेस है। मधुबन शब्द याद आते ही वैराग्य और मिठास का अनुभव होने लगता है। यहाँ ऐसे माया आती नहीं, आयी तो भी हम उसके वश नहीं रहते, जल्दी मायाजीत बन जाते हैं क्योंकि यहाँ वायुमण्डल का सहयोग है।

अभी एक होता है दुआ देना, और दुआ लेना। दुआ देना माना क्या? जब हम परिवार के कनेक्शन में आते हैं तो हरेक के भिन्न-भिन्न संस्कार होते हैं, सबके एक जैसे संस्कार नहीं होते। जिसको हम कहते हैं नेचर, किसी की तेज माना क्रोध के अंश वाली नेचर होती है, किसकी बहुत डल होती है। कईयों में फिर ईर्ष्या के, अनुमान के संस्कार होते हैं। ऐसे भिन्न-भिन्न संस्कार जो हैं, वो हमारी अवस्था को नीचे करते हैं। बाबा कहते हैं कि इस प्रकार के, तरह तरह के संस्कार तो होंगे क्योंकि सबको नम्बरवन तो बनना नहीं है। विजयमाला 108 की है, तो कोई पहला एक नम्बर बना, कोई लास्ट 108 वाँ नम्बर बना, उसका कारण क्या है? उनका पुरुषार्थ जो है, संस्कार जो हैं वो परिवर्तन नहीं हुए तो संस्कार भिन्न-भिन्न होंगे लेकिन हम अपने को संस्कारों के टक्कर से बचाकर चलें। कोई हैं जो विकारों के वश हैं, वह बंधे हुए हैं दूसरे को छुड़ा सकते हैं क्या? तो एक को देख करके मेरे में वह बुराई न आ जाये इसलिए बाबा कहता है आप यही लक्ष्य रखो कि मुझे दुआ देनी है। उसके वश नहीं होना है लेकिन मुझे दुआ देनी है क्योंकि मुझे बाबा की श्रीमत यह है कि दुआ देना है, तो फीलिंग भी नहीं आयेगी, ईर्ष्या व घृणा भी नहीं आयेगी। दुआ देंगे तो इन सबसे छूट जायेंगे। दुआ देना माना सबके प्रति बहुत अच्छी भावना रखनी है और हर तरह से सहयोग देना है।

दुआ लेना माना क्या? कोई कुछ भी कहे, हमको कुछ भी उल्टा-सुल्टा बोले तो भी उससे हम दुआ लेवें यानी यह समझें कि मेरे को याद दिलाता है कि मैं परमात्मा का बच्चा सहनशील हूँ, मैं ऊंचे ते ऊंची आत्मा हूँ। वह क्रोध करके मुझे याद दिलाता है कि आप तो सहनशील हो। मैं परवश हूँ लेकिन आप वह हो। तो वह भले बद्दुआ देवे लेकिन हम समझते हैं कि वह हमको स्मृति दिलाता है। मान लो रास्ते में किसी का अचानक एक्सीडेंट होता है, हम उसके पहचान वाले नहीं है, लेकिन उसके पास जाके थोड़ा पूछते हैं, उठाते हैं, हॉस्पिटल तक पहुंचाते हैं, तो उस समय उसके दिल से क्या शब्द निकलते हैं? आपको कभी नहीं भूलेंगे, जीवनभर आपको याद करेंगे, तो यह दुआ हुई ना! तो आपने दुआ दी, उसने भी दुआ दी। ऐसे दुआयें देते और लेते चलो।

परमात्मा की याद भूल जाने से ही आते हैं दुःख और अशांति

राजयोगिनी दादी जानकी जी

आप सब जानते हैं कि आज दुनिया में दुःख, अशान्ति बढ़ रही है, क्यों बढ़ रही है? कारण तो हरेक के अपने-अपने होंगे लेकिन टोटली अगर हम देखें तो सभी का सम्बन्ध परमात्मा पिता से टूटा हुआ है। ऐसे पिता को हम पहचानकर याद करें, योग लगायें, तो दुःख, अशान्ति से छूट सकते हैं।

सभी यह तो समझते ही हैं कि पवित्रता बहुत अच्छी चीज़ है। अपवित्रता दुःख का कारण है और पवित्रता सुख का कारण है। तो हर एक क्या पसंद करता है, सुख या दुःख? सुख ही पसंद करता है ना! यूँ तो सुखी रहते भी होंगे, लेकिन सदा सुखी रहें, कोई भी बातें आये लेकिन मेरे सुख को कोई ले जा नहीं सकता क्योंकि हम बच्चे किसके हैं? हम परमात्मा को पिता कहते हैं, तो हम उनके बच्चे हैं। लेकिन आज उस बाप को भूलने के कारण ही दुःख आता है। मनुष्य चाहता तो यही है कि हम सदा सुखी रहें और सहज ते सहज साधन है परमात्मा की याद मन में हो, बस, क्योंकि तन से तो भिन्न-भिन्न कार्य करना पड़ता है, मनुष्य जीवन है, तो जीवन के लिए कर्म तो करना ही पड़ता है। लेकिन हमारी मूल चीज़ है, जीवन की विशेषता - सुख और शांति। वो हमारी रहे, उसके रहने के लिए प्रयत्न तो सब करते हैं लेकिन हमारे जन्म-जन्म के पिता, अविनाशी सुख दाता, शान्ति दाता हैं, उसको हम भूलते क्यों हैं? लौकिक पिता की याद सूक्ष्म में होती ही है। ऐसे ही परमात्मा जो हमारा सदा का पिता है, अविनाशी है, तो अविनाशी पिता को भूलना नहीं चाहिए लेकिन भूल जाता है इसलिए बीच-बीच में परमात्मा मेरा पिता है, यह स्मृति पक्का करो तो दुःख के टाइम उसकी याद आने से कभी टेन्शन व गुस्सा नहीं आयेगा। परमात्मा तो ऐसे मददगार हैं, जिस समय आपको जो चाहिए उस समय हाज़िर हो जाता है क्योंकि हम उनके बच्चे हैं और वो हमारा पिता है। पिता के नाते से भी हमारा हक लगता है, पिता के पास जो है वो ज़रूर बच्चे को देना ही पड़ेगा। इसीलिए ऐसे पिता को याद करना, हमारा प्यार से तो भिन्न-भिन्न कार्य भी है और फर्ज भी।

त्रिकालदर्शी होने से जवाब मिलता - नथिंगन्यू

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हम बाबा के साथ इस सृष्टि रूपी खेल में खिलाड़ी हैं। खिलाड़ी बनकर खेल को देखते तो मजा ही मजा है। हम जो कर्म करते हैं उसके लिए हमें हर प्रकार की नॉलेज हो। नॉलेज इज़ पॉवर।

बाबा ने हम बच्चों को प्रवृत्ति में रहते निवृत्त रहने, कर्म करते भी कर्म से अकर्मी बनने की पूरी नॉलेज दी है। जिस नॉलेज के आधार पर प्रवृत्ति में हम बैलेन्स रखकर चलते हैं, प्रवृत्ति को निभाते भी उससे निवृत्त रहने की शक्ति अपने पास जमा हो। निवृत्त रहने के लिए हर कर्म में आने से पहले अपने को डिटैच करो, एक सेकण्ड अशरीरी बनो फिर कर्म करो तो वह कर्म गलत नहीं हो सकता।

देही अभिमानी बन फिर देह के भान में आकर कार्य व्यवहार शुरु करें तो उस कार्य का न अभिमान होगा, न बोझ होगा। न रॉन्ग होगा, न डिस्टर्ब होंगे क्योंकि यह नॉलेज है कि मैं आत्मा साक्षी बनकर इन कर्मेन्द्रियों से यह कार्य कराती हूँ। तो साक्षी व दृष्टा बन इन कर्मेन्द्रियों के द्वारा ऐसे कर्म करेंगे जैसे ऊंची स्टेज पर बैठकर एक्टिंग देखते हैं। जो रॉन्ग कर्म होता है वह दिखाई पड़ता है। साक्षी हो कर्म करने से बैलेन्स आ जाता। लॉ और लव का बैलेन्स परमार्थ और व्यवहार का बैलेन्स... दोनों का सही-सही बुद्धि में जजमेंट रहे। अगर बुद्धि सही जजमेंट नहीं देती है, समय पर राइट टच नहीं होता है, तो रॉन्ग कर्म हो जाता फिर बुद्धि पर बोझ होता इसलिए अटेन्शन प्लीज़। माना स्व की सीट पर अटेन्शन से हरेक बात की रिज़ल्ट का मालूम पड़ता है।

त्रिकालदर्शी होने से जवाब मिलता - नथिंगन्यू। जो हुआ कल्याणकारी हुआ। एकदम भविष्य का फायदा बुद्धि में टच होगा जबकि हम जानते हैं कि स्थापना भी होनी है तो विनाश भी होगा, अनेक प्रकार के सृष्टि के खेल चलेंगे तो खिलाड़ी बनकर खेल देखें या रोयें। टेन्शन माना मन का रोना। खिलाड़ी होकर खेलना माना हँसते-हँसते नाचते रहना। तो हम बाबा के साथ इस सृष्टि रूपी खेल में खिलाड़ी हैं। खिलाड़ी बनकर खेल को देखते तो मजा ही मजा है। हम जो कर्म करते हैं उसके लिए हमें हर प्रकार की नॉलेज हो। नॉलेज इज़ पॉवर। अपनी स्थिति को ऊंचा रखने के लिए बाबा ने हमें मंत्र दिया है- मनमनाभव, मध्याजी भव और मामेकम याद करो। यह मंत्र ही अजपाजाप है। बाबा से हमें पहला वर्सा मिला है- ज्ञान रत्नों का, दूसरा वर्सा है सर्वशक्तियों का। जब स्वयं ऑलमाइटी ने हमें शक्तियां दी, अथॉरिटी दी तो स्थिति कमज़ोर क्यों बनती! सब कारणों का निवारण है शक्तियां।

हम शिव शक्ति पाण्डवों के सामने यह माया क्या है! बाबा कहते यह माया है छुई मुई। इसे अंगुली दिखाओ तो मुरझा जायेगी। अगर संकल्प की सृष्टि बनाओ तो बड़ी माया है। संकल्प को शक्तिशाली बनाओ तो माया छुई मुई हो जायेगी। तो माया से बचने का साधन है- अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान के बच्चे समझो, शक्तिशाली रहने से माया की शक्ति छू नहीं सकती।